आचार्य जिनचन्द्र

जीवन-परिचय : आचार्य जिनचन्द्र सिद्धान्तशास्त्रों के विद्वान रहे हैं। वे भास्करनन्दि के गुरु हैं, जिनका उल्लेख श्रवणबेलगोला के 55वें शिलालेख में आया है। वे आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती के पश्चात् ही हुए हैं।

जिनचन्द्राचार्य का समय 11वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध या 12वीं शताब्दी का पूर्वार्ध माना जाता है।

रचना-परिचय : आचार्य जिनचन्द्र का एकमात्र ग्रन्थ 'सिद्धान्तसार' ही उपलब्ध है—

1. सिद्धान्तसार : सिद्धान्तसार ग्रन्थ प्राकृत भाषा में है। इस ग्रन्थ पर संस्कृत भाष्य भी उपलब्ध है, जो ज्ञानभूषण द्वारा रचित है। इसका प्रकाशन माणिकचन्द्र ग्रन्थमाला से 'सिद्धान्तसारादिसंग्रह' के रूप में हो चुका है। इसमें 89 गाथाएँ हैं। आचार्य ने इस ग्रन्थ में 14 मार्गणाओं और 14 गुणस्थानों का वर्णन किया है। यह ग्रन्थ छोटा अवश्य है, परन्तु इसमें सिद्धान्त के विषयों का पर्याप्त वर्णन है।